SATISAR FOUNDATION
श्री अमरेश्वर संतोषणार्थ
Join us for Global Workshop on
श्रुतेश्वर मन्त्रस्य
जप विधि
3rd Aug. 2020 @ 7.30 AM
This is part of the main book on श्री अमरनाथ जी
Let us invoke Lord Shiv for the betterment of mankind
For Private Circulation- Not for Sale
Price: Promotion and propagation of Kashmiri Pandit Culture

SATISAR FOUNDATION

MANTRA RECITATION OF
BUTESHWAR MAHADEV MANTRA
3rd Aug. 2020 @ 7.30 AM

ALL SHALL START THE JAP (RECITATION)

03-08-2020 at प्रातः 7.30

- धूप व् दीप जलाए
- तिलक लगाए
- देवी की मूर्ति /चित्र पर तिलक व् पुष्प लगायें
- जप के बाद नैवेद्य के रूप मे किशमिश नारियल, लौंग, इलाची व् अन्य प्रिय भोग अर्पण करे
- जो साधक संकल्प लेने का नियम प्रयोग करना चाहे तो वे सभी जन 7.00 AM र प्रारंभ करे

  यह जप हम शारीरिक कष्टों के निवारण साधक जनों की रक्षा तथा भूतेश्वर महादेव के संतुष्टि हेतु
- ध्यान एक बार पढ़ें , गायत्री तीन बार पढ़ें मन्त्र का जप 108 अथवा 1008 बार करें

| शिव के स्तोत्रो व् चरित्रों का गान कर लीला पढ़कर क्षमा माँगे

श्री गणेश जी , श्री गुरू तथा पंचदेव का संमरण कर
शिव के नित्य साधक धू प दीप के पश्चात
हाथों पर जल ले कर प्रात: 7.00 बजे संक्लप
कर हमारा मार्गदर्शन करेगे
ध्यान,गायत्री व् मंत्र प्रात: 7.30 बजे
प्रारम्भ करे

आसन पर ही जप करे
जप माला अथवा करमाला पर जप करे

आप जप के साथ पुष्पाचन भी कर सकते हे।

परं परस्थं गहनादनादिमेकं निविष्टं बहुधा गुहासु।
सर्वालयं सर्वचराचरस्थं त्वामेव शंभु शरणं प्रपद्ये ॥

मैं आप शम्भु कल्याण की भूमि को नमस्कार करता हूं जो माया तत्व से परे (दूर) ठहरे हैं, अनादि हैं अद्वितीय एक ही होते हुए भी अनेकों प्रकारों से हृदय रूपी गुफाओं में वास करते हैं सब का आश्रय हैं और सब स्थावर जंगम पदार्थों में ठहरे हैं।

न्यास

कर न्यास	षड् अंग न्यास
ओं अङ्गुषठाभ्यां नमः	ओं हृदयाय नमः
हां तर्जनीभ्यां नमः	हां शिरसे स्वाहा
हीं मध्यमाभ्यां नमः	हीं शिखायै वषट्
ओं अनामिकाभ्यां नमः	ओं कवचाय हूं
हां कनिष्ठकाभ्यां नमः	हां नेत्राभ्यां वौषट्
हीं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः	हीं अस्त्राय फट

।। हां हीं प्राणायामः ।।

संकल्प मंत्र

ओं अस्य श्री भूतेश्वर मन्त्रस्य शिव ऋषिः
गायत्रं छन्दः भूतेश्वरो देवता हूं बीजं
ह्रीं शक्ति ओं कीलकं आत्मनो वाक् मनः
कायो ऊपार्जित पाप निवारणार्थे मम् सर्व संकट,
आधि, व्याधि ,ग्रहपीडा शमनार्थे जपे विनि योगः

ध्यान

कुन्देन्दु भासं शशिखण्ड चूडं
कपाल पाश अंकुश शूल हस्तम् ।
त्रिलोचनं भूतिसितं हस्न्तं
भूतेश्वरं चेतसि चिन्तयामि ।।

गायत्री

भूतेश्वराय विद्महि जीववर्धनाय धीमहि तन्नो
भूतेश्वर प्रचोदयात् .....3 बार

मंत्र

ओं ह्रीं हूं भूतेश्वराय नमः
108 / 1008 बार

गुह्याति गुह्य गोप्तां, त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देव त्वत् प्रसादात् महेश्वर ।।

अनेन मन्त्र जपेन आत्मनो,
वाङग मनः कायो, उपार्जितं
पाप निवारणार्थं ईष्ट कामना सिद्धय् अर्थं,
भूतेश्वर भगवान साङग,
सपरिवारः प्रीयतां प्रीतो अस्तु।।

हाथों मे फूल ले कर क्षमा माँगे

तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमोनमः ॥

(महेश्वर) हे महेश्वर (तव) आपका (तत्त्वं) मर्म, तत्त्व, भेद (न) नहीं (जानामि) जानता हूँ कि आप (कीदृशः) किस प्रकार के (असि) हैं। (यादृशः) जिस प्रकार के भी (असि) हों (महादेव) हे महादेव (तादृशाय) उसी प्रकार के आप को (नमोनमः) बारम्बार नमस्कार है।

श्री अभिनवगुप्त कृत भैरव स्तोत्र

व्याप्त चराचर भाव विशेषं
चिन्मयमेकमनन्तमनादिम् ।
भैरव नाथमनाथ शरण्यं
त्वन्मय चित्ततया हृदि वन्दे ।।1।।

त्वन्मयमेतदशेषमिदानीं
भाति मम त्वदनुग्रह शक्तया ।
त्वं च महेश! सदैव ममात्मा
स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।2।।

स्वात्मनि विश्व गते त्वयि नाथे
तेन न संसृति भीति कथास्ति ।
सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह–
त्रास विधायिषु कर्म गणेषु ।।3।।

अन्तक! मां प्रति मा दृशमेनां
क्रोध कराल तमां विदधीहि ।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो
भीषण भैरव शक्ति मयोस्मि ।।4।।

इत्थमुपोढ भवन्मय संवि–
द्दीधिति दारित भूरित मिस्रः।
मृत्यु यमान्तक कर्म पिशाचै–
नाथ! नमोऽस्तु न जातु बिभेमि।।5।।

प्रोदित सत्य विबोध मरीचि
प्रोक्षित विश्व पदार्थ सतत्त्वः।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे
त्वय्यहमात्मति निर्वृत्तिमेमि।।6।।

मानस गोचरमेति यदैव
कलेश दशातनु ताप विधात्री
नाथ! तदैव ममत्वदभेद
स्तोत्र परामृत वृष्टि रूदेति ।।7।।

शंकर ! सत्यमिदं व्रत दान
स्नान तपो भवताप विनाशि।
तावक शास्त्र परामृत चिन्ता
सिन्धति चेतसि निर्वृति धारा।।8।।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं
संविदियं मम भैरव नाथ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं
दुर्लभमन्यजनै समयज्ञम्।।9।।

वसु रस पौषे कृष्ण दशम्याम
अभिनव गुप्तः स्तवमिमकरोत्।
येन विभूर्भव मंरू सन्तापं
शमयति झटिति जनस्य दयालु।।10।।

महादेवस मंत्रव तनमन्
त धन युस क्षण सुरे
तमिस शंकर टूठिथ जन्म
मरनक दुःख त भय हरे।
ब्याहिथ कैलासस प्यठ
हिम गिरि सुता ह्यथ खुनि गणेश
तिथिस स्थानस तस रूस
परमब्रह्म योगी कुसो धरे। महादेवस०
तमिस छा काहं ति पोशान
अमर ज़गतक देव छि तसि शारण
छि आसान तिम ति प्रारान
कमि क्षन महेश्वर असि वरे। महादेवस०

खसिथ काहं ति-क्रम डालुन,
कुनि विज़ि छु तस तान्य प्रभवरस
छु टोठ सुय तस युस काहं
शिवमय बनिथ शिव शिव परे। महादेवस०
छु भक्तस शिव शंकर शम सुख
वरान बडि अनुग्रहय
जगत मुक्ति तस दिथ, रचि वति
निवान गरि पथ गरे। महादेवस०

प्रभो चिन्तामय केवल च़र अचर
जगतकि भव महेश
छु फुलरावुन चेय तान्य रसरहित
हुछिमचि कुलि थरे। महादेवस०
प्रभो गौरी शंकर, अनुग्रह
करखना असि वरख
मनक्य संताप दुःख त दाध
जन्म मरनकि यति तति हरख। महादेवस०
म्य दिख तार तारनहार, शिव शिव
परान युथ ब तर अपोर,
सुमन मा सत मार्ग सुकृत कर्मन
हुन्द म्य फल व्यचोर। महादेवस०
अपज़्य संसारक्य सुख, गुडप्यठ
म्य भास्येय प्रियवन्ययि

विषय सुख तिम भोगित, मनुष्य
मन वछिम्य दयिक्न्ययि। महादेवस०
चें यिम् भाव शेरि भावनय, कमल
तुलसीदल त् व्यन गुलाब
तिमन छुख पूरान आश, मनुष्य
जन्मक्य दिथ सुख त सुलाभ। महादेवस०

चे छिय ब्यल त मादल टाठि
ननि तनि धतरि पोश फलिमतिय
खटिथ चोन भाव शैव, शिव क्रम
व्यचार्यथ छि डलिमतिय। महादेवस०

असि रटमित छ मायाज़ाल, शिव
वछित सोन हाल ज़्यनप्यठय
अपज़ि पज़ि भाव मोहक्य,
विजि रटिथ कमि मन खटय। महादेवस०
करुन छुय चे काहं सोन पाय पज़ि
वतिम्य दिम (तार) तर नचीय
विनाशी देह प्राविथ
हर शिव महेश्वर परनचिय। महादेवस०
मनुक सन्तोश प्राविथ असि लगि
सुखुक तार भवसरय
ब किथ चय निश दूरय यति तति
च्यय युदवय क्षण खरय। महादेवस०

महादेवस मंत्रव तनमन् त धन युस क्षण सुरे
तमिस शंकर टूठिथ जन्म मरनक दुःख त भय हरे।

भूतनाथ महादेव को इष्ट भोग व् नारियल,लोंग, ईलाची अर्पण कर

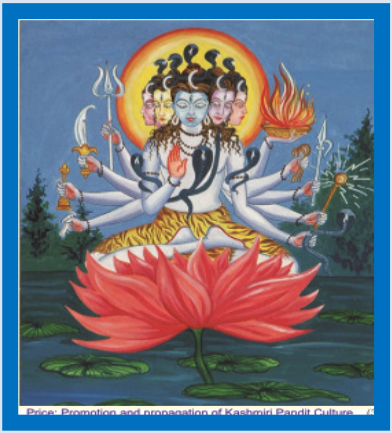

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयारविन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि ।।

आपन्नोस्मि शरणोस्मि सर्वावस्थासु सवर्दा भगवन त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् ।।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः ।।